शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी और कहानी का विकास

विनीता गुप्ता (शोधार्थी)
बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय
भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी कहानी का इतिहास बहुत पुराना नहीं है किन्तु इसका विकास द्रुतगति से हुआ। स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी साहित्य में कहानी की एक समर्थ परम्परा मिलती है। मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने के कारण उसमें कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति प्राचीन समय से रही है। वास्तविक रूप से कहानी के प्रारम्भ से अवगत होना सहज नहीं, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है, कि मनुष्य की आदिम सभ्यता से ही कहानी का स्वरूप सामने आया होगा। उनमें अपने अनुभवों को दूसरों से कहने की प्रवृत्ति रही। हमें प्रारंभिक रूप में लोक-कथा, बोध-कथा, पद्यात्मक आख्यान और दृष्टांत, पुराण कथा आदि प्राप्त होते हैं। यही नहीं मनुष्य के सम्बन्धों से सम्बन्धित कथायें भी उपलब्ध हुई हैं। आदिम सभ्यता से लेकर आज तक मानव विकास यात्रा का इतिहास जिन कला रूपों में प्राप्त होता है उनमें से कहानी एक प्रधान रूप है। प्रारंभिक कहानियाँ अधिकांशत: मौखिक परम्परा में मिलती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी और हिंदी कहानी की विकास यात्रा पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भारत में कहानी लोक-कथा के रूप में अधिक विकसित हुई। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और अन्य भाषाओं में कहानियों का सृजन हुआ। इन कहानियों में लौकिक और अतिप्राकृत तत्वों की प्रधानता थी। इनमें कहीं चमत्कार और अविश्वसनीयता झलकती है, तो कहीं कौतूहल और जिज्ञासा बनायें रखने के लिये अप्रासंगिक कार्यों का वर्णन है, कहीं संयोगों और आकस्मिकताओं की प्रधानता है, कहीं इनमें नीति और ज्ञान की शिक्षा है और कहीं किस्सागोई गप प्रमुख होने से मनोरंजकता अधिक है। शिल्प की दृष्टि से विचार करने पर इन पुरानी परम्पराओं से जुड़ी कहानियों में काल्पनिकता, अलंकारिकता और असंभव सी घटनाओं का ताना-बाना बुनने की प्रवृत्ति है। इनमें विश्वसनीयता और प्रमाणिकता का अभाव सा दिखायी देता है।

प्रारंभिक कहानियों में संस्कृत के ग्रंथों का अवलोकन किया जा सकता है। इनमें पंचतंत्र, कथासरित्सागर, दश कुमार चरित्र आदि उल्लेखनीय हैं, जिनमें विविध विषयों से जुड़ी कहानियाँ मिलती हैं। रामायण और महाभारत की पौराणिक कहानियाँ भी लोकप्रचलित रहीं, जिन्होंने जनमानस को स्पर्श किया। इनके अतिरिक्त बुद्ध की जातक कथायें भी कहानी के प्रारंभिक रूप का परिचय देती हैं। शिशुकुमार जातक, बांदरेन्द्र जातक आदि में ज्ञानप्रद कथायें मिलती हैं। इनके अतिरिक्त दादी-नानी की कहानियाँ भी प्रसिद्ध रही, जिन्हें बालकों को सुनाकर उनके ज्ञानवर्धन किया जाता था। देवताओं, राक्षसों और परियों की कहानियाँ भी जनता में लोकप्रिय रहीं हैं।

हिंदी की प्रथम कहानी

हिन्दी में कहानी लेखन के प्रारम्भ के सम्बंध में विभिन्न मतभेद हैं। हिन्दी की पहली कहानी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कौन सी थी, इसका लेखन कब हुआ ? इस तरह के अनेक प्रश्न सामने आते हैं। कतिपय विद्वानों के अनुसार बंग महिला की कहानी 'दुलाई वाली' (1970) हिन्दी की पहली मौलिक कहानी है, जबकि कुछ विद्वान किशोरी लाल गोस्वामी की 'इंदुमती' को हिन्दी की पहली कहानी मानते हैं। माधवप्रसाद मिश्र की 'मन की चंचलता' को भी पहली कहानी बताया गया, क्योंकि इस कहानी का लेखन इन्दुमती से छः माह पहले ही हो चुका था। एक अन्य विद्वान के अनुसार (1800-1810) के मध्य हिन्दी की पहली कहानी का जन्म इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' के रूप में हुआ था। हिन्दी की पहली मौलिक कहानी का विवाद आज भी समाप्त नहीं हुआ है । इस सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'सरस्वती' में प्रकाशित कुछ मौलिक कहानियों का उल्लेख किया है -

(1) किशोरी लाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' (1900) और 'गुलबहार' (1902)

(2) मास्टर भगवान दास (मिरजापुर) की 'प्लैग की चुड़ैल' (1902)

(3) रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903)

(4) गिरिजादत्त वाजपेयी की 'पंडित और पंडितानी' (1903)

(5) बंग महिला की 'दुलाई वाली' (1907)

यद्यपि मार्मिकता, भाव प्रधानता और मौलिकता की दृष्टि से 'इन्दुमती', 'ग्यारह वर्ष का समय' और 'दुलाई वाली' को हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी की श्रेणी में रखने का प्रयास किया गया तथापि 'इन्दुमती' पर किसी बंगला कहानी का प्रभाव दिखायी देने के कारण उसे हिन्दी की मौलिक कहानी नहीं माना गया। इसी तरह बंग महिला की 'दुलाई वाली' की मौलिकता भी संदेहास्पद मानी गयी । अतः 'ग्यारह वर्ष का समय' को हिन्दी की पहली मौलिक कहानी का स्थान दिया गया। लेकिन इस क्षेत्र में और नई खोजें हुई तो 'ग्यारह वर्ष का समय' की मौलिकता भी विवादास्पद हो गयी और किशोरी लाल गोस्वामी की एक अन्य कहानी 'प्रणयिनी परिणय', माधवराव सप्रे की दो कहानियाँ 'एक टोकरी भर मिट्टी' और 'सुभाषित रत्न' को भी हिन्दी की पहली मौलिक कहानी मानने का प्रयत्न हुआ। इसके साथ ही ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्मप्रचार के लिये लिखी गयीं दो कहानियों को भी प्रथम कहानी कहा गया। ये कहानियाँ थीं 'जमींदार का दृष्टांत' (1871) और 'छली अरब की कथा' (1903), लेकिन इन दोनों कहानियों को ईसाई प्रभाव और कलात्मक दृष्टि से अधिक उत्कृष्ट न होने के कारण हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी नहीं माना गया । माधवराव सप्रे की 'सुभाषित रत्न' विन्यास की दृष्टि से पुरानी शैली की कहानी मानी गयी। जबकी उनकी 'एक टोकरी भर मिट्टी' अधिक विश्वसनीय है। यह कहानी तत्कालीन परिस्थितियों, जमींदारी सामन्ती व्यवस्था में मनुष्य के शोषण को दिखाती एक प्रमाणिक कहानी है।

उपर्यक्त विद्वानों के प्रथम कहानी सम्बन्धी विचारों को ध्यान में रखकर कहा जा सकता है कि अधिकांश विद्वानों ने 'रानी केतकी की कहानी' को प्रथम मौलिक कहानी माना है। किन्तु आज के विद्वानों की दृष्टि से हिन्दी की मौलिक और प्रथम कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' है, क्योंकि इसमें कहानी के प्रायरू सभी तत्व समाहित हैं। राजेन्द्र यादव के अनुसार हिन्दी की प्रथम मौलिक कलापूर्ण कहानी 'उसने कहा था' है, जिसे पंडित चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने लिखा था, इस

कहानी से आधुनिक हिन्दी कहानी का आरंभ हुआ है।

इसका प्रौढ़ और विकसित स्वरूप मुख्य रूप से प्रेमचंद की कहानियों में मिलता है। प्रेमचंद के अतिरिक्त अन्य कहानीकार भी सामने आये। जिन्होंने सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, नैतिक, सुधारवादी, सांस्कृतिक आदि सरोकारों की कहानियाँ लिखी। जिनमें विश्वम्भर नाथ कौशिक की 'रक्षाबंधन', गुलेरी जी की 'उसने कहा था', प्रेमचंद की 'पंच परमेश्वर', जयशंकर प्रसाद की 'आकाशदीप' आदि कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। इनमें आदर्शवादी दृष्टिकोण दिखायी देता है। जहाँ प्रेमचंद ने यथार्थवादी कहानियों में रूचि दर्शायी वहाँ प्रसाद ने भावमूलकता को मुख्य रूप से अपनाया । प्रसाद की कहानियों में छायावादी जीवन दृष्टि और ऐतिहासिक चेतना मुखरित हुई है। इनकी कहानियों में एक ओर दो विरोधी भावों का संघर्ष दिखायी देता है तो दूसरी ओर एकरसता मिलती है। कहीं मनोवैज्ञानिकता, संवेदना और विद्रोहात्मक प्रवृत्ति का समावेश हुआ है।

दूसरे मुख्य कहानीकार प्रेमचंद हैं। आदर्श-यथार्थ से जुड़ी इनकी कहानियाँ मानव-मन को छूने में समर्थ हैं। प्रेमचंद पहले आदर्श गढक़र पीछे कहानी का ढाँचा तैयार करते हैं, उनका कथ्य और शिल्प साथ-साथ चलते हैं और अत्यंत सफलता के साथ दोनों का एक स्थापत्य खड़ा कर देते हैं। इनकी कहानियों में मानवीय संवेदना और भारतीय संस्कृति का गौरव, सुधारवादी दृष्टिकोण, नैतिकता का आग्रह और जीर्ण रूढियों को उखाड़ फेंकने की चेतना विद्यमान है। इस दृष्टि से 'नमक का दरोगा', 'पंच परमेश्वर', 'बड़े घर की बेटी' उल्लेखनीय हैं। यथार्थवाद की दृष्टि से इनकी 'कफन', 'पूस की रात', 'नशा' आदि कहानियाँ जीवन की कटुता को उजागर करती हैं। उनकी कहानियों का नग्न यथार्थ पाठक पर सीधा प्रभाव डालता है। इनकी कुछ कहानियों में आदर्श और यथार्थ का सम्मिश्रण देखा जाता है। 'आत्माराम', 'सवा सेर गेहूं' आदि कहानियाँ इसी कोटि में आती हैं।

प्रेमचंद के बाद कहानियों के स्वरूप में परिवर्तन आया। मनोवैज्ञानिक कहानियाँ लिखी जाने लगीं। इनमें जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल और इलाचंद्र जोशी आदि कहानीकारों ने पदार्पण किया। इनकी कहानियों में व्यक्तिवादी जीवन दर्शन दिखायी देता है। इन्होंने व्यक्ति को केन्द्र में रखकर उसके अंतर्द्वंद्वों का चित्रण किया है। इस दृष्टि से जैनेन्द्र की 'एक रात', यशपाल की 'महादान', 'कर्मफल', अज्ञेय की 'साँप', इलाचंद्र जोशी की 'कापालिक', 'दुष्कर्म' आदि कहानियाँ अवलोकनीय हैं। जिनमें मनोविज्ञान के सिद्धांतों और मनोविश्लेषण की प्रक्रियाओं का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। किंतु यशपाल की कहानियों में मार्क्सवादी दर्शन के प्रभाव के कारण द्वंद्व अधिक मिलता है।

स्वतंत्रतापूर्व मनोवैज्ञानिक कहानियों के अतिरिक्त विविध पक्षों को लेकर कहानियाँ लिखी गई। भगवती चरण वर्मा की कहानियों में सामाजिक और राजनैतिक चेतना का पुट मिलता है। राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह ने प्रेम सौंदर्य और रोमांस और सामाजिकता को अपनी कहानियों का विषय बनाया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में नये उत्साह और उमंग की लहर व्याप्त थी। इसलिए स्वतंत्रता पश्चात् लेखन के क्षेत्र में भी जागरण की नई चेतना का उन्मेष दिखायी दिया। इस समय कहानी, लेखन की केन्द्रीय विधा रही। इसमें कथा प्रयोग के स्तर पर विविधता, विभिन्न आंदोलनों

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

के रूप में दिखायी पड़ती है। जिनसे कहानी के स्वरूप का बोध होता है। इस समय आंचलिक कहानी, नई कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी आदि कथा धारायें विभिन्न आंदोलनों से निसृत हुई। हिन्दी कहानी के क्षेत्र में 1950 के आस-पास जो आंदोलन शुरू हुआ उसे नई कहानी के नाम से अभिहित किया गया। इसमें आस्था का नवोन्मेष दिखायी देता है। जिससे नये कहानीकारों को जीवन के प्रति यथार्थवादी दृष्टि और संघर्ष से जूझने की शक्ति प्राप्त हुई। ऐसे कहानीकारों में मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कहानीकारों की कहानियाँ विभिन्न संदर्भों से जुड़ी रही। मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, धर्मवीर भारती, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि की कहानियों में शहरी मध्यवर्ग की समस्याओं को उभारा गया। इन्होंने शहरी जीवन के तनाव, दौड़-भाग, पति-पत्नी सम्बंध आदि को अपनी कहानियों में उजागर किया है।

नई कहानियों में ग्रामांचल से जुड़ी कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। इनमें ग्रामीण जीवन की समस्यायें, पारम्परिक आचार-विचार, रिश्ते आदि का स्वभाविक वर्णन मिलता है। फणीश्वरनाथ रेणु की 'तीसरी कसम' कहानी एक निश्चछल, भोले ग्रामीण युवक की प्रेमभावना और संघर्ष की व्यथा को प्रस्तुत करती है। नये कहानीकारों में धर्मवीर भारती और अन्य कहानीकारों ने नगर और गाँवों से जुड़ी कहानियाँ लिखीं हैं। इनकी 'गुल की बन्नो', 'बंद गली का आखिरी मकान', 'यह मेरे लिए नहीं' आदि कहानियाँ नगर और गाँव की समन्वित चेतना का बोध कराती हैं । 'तीसरी जिंदगी की पीड़ा' में भारती जी ने मानव मन की छटपटाहट और तंगी की मार्मिक अभिव्यंजना की है।

नयी कहानियों में सामाजिक विसंगतियों को उभारने में रेणु की 'ठुमरी', शिवप्रसाद सिंह की 'मुर्दा सराय', रामदरश मिश्र की 'चिट्ठियों के बीच' आदि कहानियाँ सफल रहीं हैं। इनमें निम्न और मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी मुखरित हुई है। यही नहीं नयी कहानियों में मोहन राकेश की 'एक और जिंदगी', मन्नू भण्डारी की 'कमरे-कमरा और कमरे', ज्ञान रंजन की 'दाम्पत्य' आदि कहानियाँ दाम्पत्य जीवन के आकर्षण, प्रेम और उत्कण्ठा को व्यंजित करती हैं। अतः नई कहानी में नगर-गाँव आदि के जीवनानुभवों की सफल अभिव्यक्ति हुई है।

आंचलिक कहानी के प्रवर्तन का श्रेय फणीश्वर नाथ रेणु को जाता है। इनकी 'ठुमरी', 'आदिम रात्रि की महक' आदि कहानियाँ आंचलिक समस्याओं को उभारती है। रेणु के अतिरिक्त नागार्जुन, भैरव प्रसाद गुप्त, मार्कण्डेय, शैलेष मटियानी आदि की गणना भी आंचलिक कहानीकार के रूप में की जाती है। इनकी कहानियों में एक विशेष जनपद को आधार बनाकर वहाँ के सुख-दुरूख, राग-रंग आदि को उभारने की चेष्टा की गई है।

दूसरी ओर अकहानी का आंदोलन लेखन के क्षेत्र में विद्रोह का स्वर लेकर आया। अकहानी के अंतर्गत आधुनिक जीवन की विसंगतियों को विशेष रूप से उभारने का प्रयास किया गया है। सतीश जमाली की कहानी 'प्रथम पुरूष' अकहानी की श्रेणी में आती है। इसमें फैक्ट्री की मालकिन हमेशा सुगंधित फूल हाथ में लेकर चलती है पर फैक्ट्री का किरानी हमेशा परवाने की दुर्गंध महसूस करता रहता है। इस कहानी में कथाहीनता की प्रवृत्ति दिखायी देती है। सुरेश

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उन्याल की कहानी 'आत्महत्या' भी एक विद्रोही युवक की कहानी है वह ट्यूशन करके अपना भरण-पोषण करता है, किन्तु एक सप्ताह ट्यूशन न जाने पर उसके दस रूपये कट जाते हैं तो उसके स्वाभिमान को धक्का लगता है। इस प्रकार पाँच-सात वर्षों तक अकहानी की चर्चा रही। इसी बीच सचेतन कहानी का सिलसिला प्रारम्भ हुआ।

'संचेतना' दिल्ली के संपादक महीप सिंह ने सचेतन कहानी की घोषणा की उन्होनें कहानी को चेतना मुक्त करने की आवश्यकता समझी। इस दृष्टि से महीप सिंह की 'गंध' कहानी उल्लेखनीय है। जिसमें अनुभव को आवेग की तीव्रता के साथ व्यक्त करने पर बल दिया गया है। कहानी में प्रेमिका शांता की देह गंध प्रेमी नरेश की सम्पूर्ण चेतना को झंकृत कर देती है। इस प्रकार की सचेतन कहानियाँ कम ही लिखीं गईं किन्तु उनमें अनुभव की तीव्रता व्यक्त हुई है।

सातवें दशक में कमलेश्वर ने सामांतर कहानी का आंदोलन शुरू किया। उन्होंने समांतर नाम से एक कहानी संग्रह प्रकाशित कराया। इस कथा संकलन के सहयात्री लेखक अरविंद, कमलेश्वर, निरूपमा सेवती, मृदुला गर्ग, सतीश जमाली, श्रवण कुमार आदि थे। इन कहानियों में जीवन संघर्ष से युक्त मनुष्य की चेतना समाहित है। इनमें जीवन और लेखन से जुड़े अनेक सवाल उठाये गये और उनके उत्तर पाने की कोशिश की गई है। वस्तुत: समांतर कहानी क्रांतिकरण की दिशा में मानसिकता निर्माण का आधार है। समांतर कहानी अनेक अतिरंजना रूप झूठी स्थितियों के भटकाव को पार कर उन्हें प्रमाणिक संदर्भों की ओर लौट आने का संकेत देती है।

अस्तु समांतर कहानी का भी प्रचलन हुआ। यह कथा आंदोलन स्वतंत्रता पश्चात् की हिन्दी कहानी की विकासात्मक यात्रा और पूर्व पीठिका का लघु विवरण प्रस्तुत करती है। हिन्दी में कहानी का इतिहास लगभग एक सौ पचास वर्ष का है । वस्तुत: कहानी का विकास भारतेन्दु काल से माना जाता है । भारतेन्दु के पूर्व लल्लू लाल का 'प्रेमसागर' (1803), मुंशी सदासुख लाल (नियाज) का 'सुखसागर', सजल मिश्र का 'नासिकेतोपाख्यान' (1803) और इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' (1808) ये ग्रंथ हिन्दी कहानी की पृष्ठभूमि के रूप में उल्लेखनीय हैं।

संदर्भ सूची

1.हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ.नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, 1998, संस्करण 25, पृष्ठ 475

2.डॉ.ऋषि कुमार चतुर्वेदी, नवें दशक की हिन्दी कहानी, पृष्ठ 9, ग्रंथायन, अलीगढ़

3.मुंशी प्रेमचंद, कफन, पृष्ठ 14

4.आकाशवाणी वार्ता, विविध प्रसंगध्भाग 2-सम्पादक डॉ.कौशल नंदन गोस्वामी, पृष्ठ 43, प्रकाशन वर्ष 1994, प्रकाशक अल्पना प्रकाशन, बरेली उ.प्र.

5.हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ.नगेन्द्र , पृ.582, प्रकाशक मयूर पेपर बैक्स, नोयडा, संस्करण २५, वर्ष 1988

6.डॉ.भगवान दास वर्मा, कहानी की संवेदनशीलता, सिद्धांत और प्रयोग, पृ 163, सन् 1972

7.डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, हिन्दी कहानी : एक अन्तर्यात्रा, पृष्ठ 36

8.इंद्र नाथ मदान, हिन्दी कहानी अपनी जबानी, 54, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1968

9.हिन्दी कहानी का इतिहास, भाग - 2, डॉ.गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2011, पृष्ठ 136